RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-11
November -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

हिन्द महासागर में भारत–चीन शक्ति प्रतिस्पर्द्धा (मालदीव के विशेष संदर्भ में)

डॉ0 विजेन्द्र सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष; रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन; सकलडीहा पी0 जी0 कालेज, सकलडीहा बाजार, चन्दौली, उ0 प्र0

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 November 2018

Keywords
रणनीति, सामरिक, राजनय, मुक्त–व्यापार समझौता, स्ट्रिंग आफ पर्ल्स, स्ट्रिंग आफ फ्लावर्स।

***Corresponding Author**
Email: vijendradefence[at]gmail.com

ABSTRACT

भारत एवं मालदीव के पुराने सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं। वर्तमान में यह छोटा द्वीपीय देश चीन एवं भारत की प्रतिस्पर्द्धा का शक्ति स्थल हो गया है। किन्तु स्वाभाविक रूप से मालदीव भारत का ही क्षेत्रीय सामुद्रिक विस्तार प्रतीत होता है। अतः मालदीव में किसी भी वाह्य शक्ति की उपस्थिति भारत के स्त्रातेजिक हितों के अनुरूप नहीं हो सकती है। चीन अफ्रीका में अपने व्यापारिक हितों एवं अन्य स्त्रातेजिक हितों के कारण हिंद महासागर में अपना विस्तार कर रहा है। मालदीव की आन्तरिक राजनीतिक स्थिति भी मालदीव में भारत–चीन प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा दे रही है। कुशल भारतीय राजनय ही मालदीव में चीन के बढ़ते प्रभाव को कम करके भारतीय हितों की सुरक्षा कर सकता है। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य मालदीव में भारत एवं चीन के हितों का परीक्षण एवं विश्लेषण कर भारत के लिए नीति–निर्माण हेतु उपयुक्त उपाय एवं सुझाव प्रेषित करना है।

Having therefore no foreign establishments, either colonial or military, the ships of war of the United States, in war, will be like land birds, unable to fly far from their own shores. To provide resting places for them, where they can coal and repair, would be one of the first duties of a government proposing to itself the development of the power of the nation at sea.[i]

-A. T. Mahan

महान रक्षा विचारक ए. टी. महान का यह कथन महासागरों के ठिकानों के सामरिक महत्त्व को प्रतिबिम्बित करता है। चीन की तेल के मामले में मध्य–पूर्व क्षेत्र पर निर्भरता रही है। यह तेल 'स्ट्रीट आफ मलक्का' से होकर चीन तक पहुँचता है। सं. रा. अमेरिका से 'दक्षिण चीन सागर' या 'ताईवान' के मुद्दे पर संघर्ष की स्थिति में वह हिन्दमहासागर में अपनी उपस्थिति बढ़ाकर निरापद रहना चाहता है। चीन ने पिछले एक दशक से सामुद्रिक डकैती रोकने के नाम पर हिंदमहासागर में 'अदन की खाड़ी' के पास तक नौ सेना के जहाजों का आवागमन शुरू कर दिया। इस कारण से भी मालदीव का भू–सामरिक महत्व बढ़ गया। मालदीव के पास से गुजरने वाले समुद्री मार्गों से भारत, चीन, जापान, एवं कई दूसरे देशों को ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति होती रही है। अतः संघर्ष की स्थिति में मालदीव पर अपनी रणनीतिक उपस्थिति रखने वाला पक्ष मजबूत स्थिति में रह सकता है। दियागोगार्सिया के आस–पास अमेरिकी उपस्थिति के कारण पूर्व में भी मालदीव का रणनीतिक महत्त्व रहा है।

मलदीव 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन' (SAARC) का सदस्य राष्ट्र है। यह देश लगभग 1200 छोटे–छोटे कोरल द्वीपों से बना है जो 26 द्वीप समूहों में विभक्त हैं। इसके सभी द्वीप कुल मिलाकर 90,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को आच्छादित करते हैं किन्तु आबादी बहुत ही कम द्वीपों पर है। पर्यटन की दृष्टि से यह विश्व में अपना स्थान रखता है। यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से पर्यटन पर ही निर्भर करती है। लक्षद्वीप से मालदीव की दूरी लगभग 700 किलोमीटर और भारत के मुख्य स्थल खण्ड से लगभग 1200 किलोमीटर है।

मालदीव 1965 में ब्रिटेन से आजाद हुआ। आधुनिक समय में यह एक गणराज्य है जहाँ राष्ट्रपति सरकार का प्रमुख होता है जो मजलिस (संसद) के गुप्त मतदान द्वारा चुना जाता है। 1978 से 2008 तक मालदीव में 'मैमून अब्दुल गयूम' ने शासन किया। 2008 में 'मोहम्मद नशीद' राष्ट्रपति चुने गये। 2013 में गयूम के सौतेले भाई 'अब्दुल्ला यामीन' चुनाव के बाद राष्ट्रपति बने। अब्दुल्ला यामीन के कार्यकाल (2013–18) में मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति नशीद को निर्वासित कर दिया गया जिन्हें भारत समर्थक माना जाता था। यामीन के कार्यकाल में न्यायपालिका पर गलत आरोप लगाये गये तथा यामीन के द्वारा एक तरह से न्यायपालिका का अपहरण किया गया। सितम्बर 2018 में हुए चुनाव में 'इब्राहिम मोहम्मद सालेह' राष्ट्रपति के चुनाव में विजयी हुये।

भारत ने 1972 में मालदीव में भारतीय दूतावास की शुरूआत की। 1988 में अब्दुल्ला गयूम के शासन काल में आपरेशन 'कैक्टस' के तहत भारत ने मालदीव में एक तख्तापलट को नाकाम किया था। अमेरिका, सोवियत संघ, ब्रिटेन तथा नेपाल और बाँग्लादेश जैसे दक्षिण एशिया के हमारे कई पड़ोसियों ने भारतीय हस्तक्षेप का समर्थन किया था। आपरेशन कैक्टस के तहत की गयी कार्यवाही की त्वरित एवं निर्णायक विजय और मालदीव सरकार की बहाली से भारत की प्रशंसा की गयी और उसके परिणाम स्वरूप भारत व मालदीव के बीच दोस्ती और सहयोग बढ़ा।[ii] किन्तु मालदीव ने भारत की कम्पनी जी एम आर से 511 अरब डालर की लागत से बनने वाले अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की डील को रद्द कर दिया था। मुख्यतः इसी घटना से दोनों देशों के बीच में दूरी बढ़ना प्रारम्भ हो गई।[iii] इसके बावजूद मालदीव यामीन के कार्यकाल में भारत के साथ मुक्त व्यापार समझौता (Free

RRIJM 2015, All Rights Reserved

Trade Agreement–FTA) करना चाहता था, किन्तु भारत ने इसमें बहुत दिलचस्पी नहीं दिखाई। यद्यपि भारत 1981 में मालदीव के साथ एक 'विशेष व्यापार संधि' कर चुका था। पिछले वर्ष (2017) में जब चीनी जहाज मालदीव पहुँचे तो भारत का असहज होना स्वाभाविक था। यद्यपि 2016 में भारत ने भी मालदीव के साथ एक 'रक्षा सहयोग समझौता' किया है किन्तु यह चीन के मालदीव में बढ़ते प्रभाव के समक्ष नाकाफी है।

हिंदमहासागर एवं मालदीव में चीन की स्थिति

चीन ने 2011 में माले में अपना दूतावास खोला। इसी से भारत एवं मालदीव के बीच में दरार आई। मालदीव चीन के सामुद्रिक रेशम मार्ग (maritime silk route) तथा 'एक क्षेत्र एक रोड' प्रोजेक्ट (one belt one road project) का प्रमुख साझीदार हो सकता है। साथ ही साथ चीन हिंदमहासागर में अमेरिका–जापान–आस्ट्रेलिया–भारत के संयोग के जबाब में अपना विस्तार करना चाहता है।

चीन ने दक्षिण चीन सागर से मलक्का जलडमरूमध्य, बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर में अपने बंदरगाह, समुद्री हवाई पट्टी, निगरानी प्रणली तथा अन्य नौ सैनिक सुविधायें विकसित कर ली हैं। साथ ही साथ पाकिस्तान के ग्वादर और कराची, म्यांमार के यांगून एवं श्रीलंका के कोलम्वो एवं हम्बनटोटा में सैन्य सुविधायें विकसित की है। इतना ही नही चटगाँव में कंटेनर सुविधा का भी विकास कर लिया है।[iv] (देखें तालिकाः 1)

तालिकाः1

Economic and Strategic Relationships of Selected Littoral South Asian Countries with China [v]

Country	Active Naval Vessels Manufactured/Co-Developed By China	Big-Ticket Maritime Infrastructure Under Development By China	Chinese Investment Spending 2005-2017 (in $ bn.)	Status of Free Trade Agreement With China
Bangladesh	46	Chittagong Port	24.1	Biggest trading partner, feasibility study started in 2016
Maldives	0	Ihavanddhippolhu Integrated Development (I havan) Project	NA	Signed 2017
Myanmar	17	Kyaukpyu Deep Water Port	7.4	ASEAN Free Trade Area (2010)
Pakistan	15	Gwadar Deep Water Port	50.6	Signed 2007
Sri Lanka	17	Hambantota port	14.7	Biggest trading partner, negotiations started in 2014

Source: Figures according to IISS Military Balance 2018 (Chapter 6: Asia)

इसके अतिरिक्त चीन ने जुलाई, 2017 में अपना एक युद्धपोत जिबूती (अफ्रीका) भेजा है, जिसका उद्देश्य सैन्य ठिकाना बनाना है। यह सब 'स्ट्रिंग आफ पर्ल्स प्रोजेक्ट' के तहत किया गया है। इस प्रोजेक्ट का उद्देश्य चीन द्वारा अपने व्यापारिक हितों का संवर्द्धन एवं विकास बताया जाता है, किन्तु इनके पीछे के सामरिक निहितार्थों को भारत द्वारा अनदेखा करना भारतीय सुरक्षा के लिए चिंताजनक हो सकता है। हिन्द महासागर एवं उसके तटवर्ती राष्ट्रों में चीनी प्रभाव से भारत की 'ब्ल्यू इकोनामी' तथा उसके सामुद्रिक परिक्षेत्र (Maritime Domain) की सुरक्षा को नुकसान हो सकता है।[vi] भारत के सामुद्रिक परिक्षेत्र में मालदीव, सेशेल्स आदि द्वीपीय राष्ट्र आते हैं।

मालदीव के एक द्वीप पर चीन और सऊदी निवेशक एक परियोजना पर कार्य कर रहे हैं। इस द्वीप का नाम इहावनघिप्पोल है। इस प्रोजेक्ट में एक आधुनिक बंदरगाह, एक एयरपोर्ट, एक क्रूज हब, एक मरीन और एक गोदी होगा। ऐसी खबरें हैं कि चीन दक्षिणी लामू प्रवाल द्वीप में एक और बंदरगाह का निर्माण कर सकता है।[vii] अगस्त, 2017 में चीन ने अपने तीन नौ सैनिक जहाज पहली बार माले में हिन्दमहासागर में उतारे थे।[viii]

मालदीव में भारत के हित

1. अल्फ्रेड महान् के अनुसार जो कोई भी हिंद महासागर पर नियन्त्रण रखेगा, एशिया पर उसी का प्रभाव होगा। यह महासागर सातों समुद्रों की कुंजी है। 21 वीं सदी में विश्व की नियति इससे ही तय की जायेगी।[ix] के. एम. पणिक्कर का तर्क था कि अन्य देशों के लिए हिंद महासागर केवल एक महत्वपूर्ण समुद्री क्षेत्र हो सकता है, परन्तु भारत के लिए यह जीवनदायी समुद्र है क्योंकि इसकी जीवन रेखायें अधिकांशतः इस क्षेत्र में ही संकेन्द्रित हैं और इसकी स्वतन्त्रता इस तटीय प्रदेश की स्वतंत्रता पर निर्भर है।[x]
2. आने वाले दशकों में जैसे–जैसे व्यापार और तेल के वाहक समुद्री गलियारे और अधिक ब्यस्त होते जाएँगे, हमारी तटरेखा और महासागर की सुरक्षा का महत्व भी बढ़ता जायेगा। सुरक्षा से संबंधित हमारी जिम्मेदारी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

बंगाल की खाड़ी और अरब सागर स्थित द्वीपों की क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित करना और संचार की समुद्री लाइनों को बनाए रखना है। इसलिए हिंद महासागर क्षेत्र में शांति बनाए रखना हमारे अपने हित में है।[xi]

3. भारत एवं मालदीव के प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं। मालदीव में काफी संख्या में प्रवासी भारतीय एवं कामगार रहते हैं। भारत के लिए उनका हित संरक्षण आवश्यक है। मालदीव की पूरी जनसंख्या का एक बड़ा भाग भारत समर्थक है। यदि भारत मालदीव से अपने आप को हटा लेता है तो मालदीव पूर्णतः चीनी लोगों के कर्ज तले दबे रहने के लिए अभिशप्त हो जायेगा। मालदीव से अच्छी संख्या में लोग व्यापार, चिकित्सा एवं शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत का रूख करते हैं। इससे भारत को विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। चीन का प्रभाव बढ़ने से इस क्षेत्र में भी भारत को नुकसान हो सकता है।
4. भारत के नौ राज्य– आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, प. बंगाल, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, गोवा, महाराष्ट्र, गुजरात, एवं अन्य केन्द्र शासित क्षेत्र– हिन्दमहासागर के तटवर्ती हैं। भारत के कुल 200 से अधिक बंदरगाह तटीय राज्यों में हैं। इनमें कांडला, पारादीप, मुम्बई, विशाखापट्टनम, चेन्नई, तूतीकोरीन, हल्दिया, एन्नौर, कोच्चि व मारमुगाओ प्रसिद्ध बंदरगाह हैं। यदि मालदीव के पास अपनी नौ सैनिक स्थिति को चीन मजबूत कर लेता है तो दक्षिण से भी पूरी तरह से भारत एवं उसके तेल–शोधक कारखाने चीनी प्रक्षेपास्त्रों की नजदीकी दूरी में होंगे।
5. चूँकि भारत विश्व की एक उभरती हुई शक्ति है और दक्षिण एशिया में अन्य राष्ट्रों के बीच उसकी बड़े भाई की स्थिति है। अतः मालदीव की रक्षा एवं सुरक्षा का पहला उत्तरदायित्व भारत का है, और भारत को मालदीव के साथ अच्छे सम्बन्धों की आवश्यकता है। भारत अपने मुख्य स्थल एवं द्वीपों (एवं विशेष आर्थिक क्षेत्र) के पास किसी भी वाह्य शक्ति की मौजूदगी अपने रणनीतिक एवं सुरक्षा कारणों से पसंद नहीं करता है। चीन एवं मालदीव के बीच मुक्त व्यापार समझौता भी हो चुका है। वास्तव में अभी तक चीन की अर्थव्यवस्था एवं बाजार भारत से विशाल है और जहाँ चीन की मौजूदगी होगी वहाँ भारत के लिए अपने पैर जमा पाना लगभग असम्भव होता है।
6. मालदीव दक्षेस (SAARC) एवं संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) का सदस्य है। यदि भारत एवं मालदीव के सम्बन्ध अनुकूल रहते हैं तो भारत को दक्षेस एवं संयुक्त राष्ट्र संघ में मालदीव के वोटों का लाभ मिल सकता है।
7. मालदीव एक मुस्लिम बहुल आबादी वाला राष्ट्र है। यहाँ कट्टरपंथ के बढ़ने की बहुत प्रबल सम्भावना है। मालदीव के कट्टरपंथ का भारत पर तत्काल प्रभाव पड़ सकता है। विशेषतः यदि यह पाकिस्तान एवं उसके जैसे अन्य राष्ट्रों की कट्टरपंथी ताकतों के प्रभाव में आ जाय।

विश्लेषण

वास्तव में मालदीव में भारत एवं चीन लगभग शून्य जोड़ खेल (Zero Sum Game) की स्थिति में पहुँच गये प्रतीत होते हैं। हिन्द महासागर अथवा इण्डियन ओसन (Indian Ocean) जैसा कि नाम से स्पष्ट है, यह महासागर भारतीय महासागर के रूप में पूरे विश्व में जाना जाता है। चीन यह साबित करना चाहता है कि यह भारत का महासागर नहीं है। वह यहाँ सामान्य सार्वजनिक क्षेत्र के बहाने अपनी उपस्थिति बढ़ाने के प्रयास में लगा रहता है। कभी–कभी चीन यह भी संकेत देता है कि चीन और भारत हिन्द महासागर की सुरक्षा में संयुक्त योगदान दे सकते हैं। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि वुहान शिखर सम्मेलन के बाद चीन अब भारत को प्रभावित करने वाले पारम्परिक क्षेत्रों में कहीं अधिक संयमपूर्ण मुद्रा अपना रहा है और संकट के समय नई दिल्ली की बात उदारता से मान भी रहा है। नई दिल्ली के लिए यह नई परिस्थिति मॉग करती है कि वह दक्षिण एशिया के अन्य देशों के बारे में चीन के साथ गम्भीरता से बात करे।[xii]

किन्तु कुछ दूसरे विशेषज्ञों का कहना है कि पिछले दशकों में चीन ने अपनी विदेश नीति में एक प्रमुख परिवर्तन यह किया है कि वह चीन केन्द्रित से विश्व केन्द्रित हो गया है और अपने हितों के अनुरूप निवेश, आर्थिक सहायता के माध्यम से दूसरे देशों, क्षेत्रों में भरपूर रूचि रखने के साथ–साथ हस्तक्षेप करने लग गया है। कुछ साल पहले चीनी नौ सेना की एक पत्रिका में चीन की हिन्दमहासागर रणनीति के बारे में लिखा गया था, ''स्थानों का चुनाव सतर्कता से करें, तैनाती सावधानी से करें, सहकारी गतिविधियों को प्राथमिकता दें, धीरे–धीरे घुसने की कोशिश करें।''[xiii] उनका मानना है कि मालदीव में चीनी दखलंदाजी भी उसकी इसी विस्तारित नीति का हिस्सा भर है।

वास्तव में पाकिस्तान, श्रीलंका, बॉग्लादेश, म्यांमार, जिबूती आदि हिन्दमहासागरीय राष्ट्रों में चीन बेहतर स्थिति में है। अतः मालदीव भारत के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। साथ ही साथ वह दक्षिण एशिया के राष्ट्रों में 'चेक–बुक राजनय' का प्रयोग कर रहा है। विशेषज्ञों के मुताबिक चीन की अर्थव्यवस्था भारत के मुकाबले लगभग चार गुना अधिक बड़ी है। अतः वह भारत की अपेक्षा आसानी से कमजोर राष्ट्रों को आर्थिक एवं व्यापारिक (व सैन्य) सहायता एवं छूट देकर उन्हें अपने पक्ष में अपेक्षाकृत आसानी से मोड़ लेता है। चीनी सैन्य आपूर्ति भारत की बजाय सस्ती पड़ती है।[xiv]

चीन भारत की अपेक्षा दूसरे देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते (FTAs) आसानी से कर सकता है। दक्षिण एशिया में पाकिस्तान के बाद मालदीव दूसरा राष्ट्र है जिसके साथ चीन ने मुक्त व्यापार समझौता किया है। चीनी निर्माण विदेशों में भारत की अपेक्षा सस्ते होते हैं और अपेक्षाकृत अधिक परिष्कृत भी होते हैं। अतः भारत को इस पहल पर भी ध्यान देना चाहिए। यद्यपि कोरियाई एंव जापानी निर्माण चीन से भी बेहतर होते हैं। किन्तु जहाँ भारत एवं चीन के बीच तुलना होती है, वहाँ चीन मजबूत बैठता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भारत भी शांत नहीं बैठा है। खबरों के अनुसार भारत ने सेशेल्स और मारीशस के द्वीपों क्रमशः 'अजंप्शन' और 'अगालेगा' पर नौ सैनिक आधार तैयार कर लिया है। यह भारतीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की 'स्ट्रिंग आफ फ्लावर्स' नीति का हिस्सा है। 'स्ट्रिंग आफ फ्लावर्स' चीन की स्ट्रिंग आफ पर्ल्स रणनीति का भारतीय प्रत्युत्तर है। स्ट्रिंग आफ पर्ल्स रणनीति के तहत चीन पूरे हिन्दमहासागर में एशिया से अफ्रीका तक व्यापारिक सुरक्षा के लिए नौ सैनिक आधार बना रखा है। आवश्यकता पड़ने पर संघर्ष की स्थिति में इन ठिकानों का उपयोग किसी भी राष्ट्र के विरूद्ध चीन कर सकता है।

निष्कर्ष

अन्ततः भारत एवं चीन की सामुद्रिक एवं हिन्दमहासागरीय नीतियॉ मालदीव में इन दोनों शक्तियों की प्रतिस्पर्द्धा की दिशा तय करेंगी। मालदीव में चीन का बढ़ता प्रभाव भारत की 'प्रथम पड़ोस नीति' (Neighboruhood frist policy) एवं 'मोदी सिद्धान्त' (Modi Doctrine) पर प्रश्न चिहन है। शीत युद्ध के दौरान अफगानिस्तान में ऐसी स्थिति थी कि दोनो महाशक्तियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोवियत संघ एक ही सड़क के निर्माण में संलग्न होते थे। हिन्द महासागर के भी कुछ छोटे द्वीपीय एवं तटीय राष्ट्रों में वही स्थिति बनती प्रतीत हो रही है। यहाँ खिलाड़ी भारत एवं चीन हैं।

धीरे–धीरे भारत की मालदीव से दूरी बढ़ती गयी क्योंकि अब्दुल्ला यामीन (मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति) के सम्बन्ध चीन से समय बीतने के साथ–साथ बेहतर होते गये। अब्दुल्ला यामीन के कार्यकाल में चीन ने मालदीव में बड़े निवेश किये। मालदीव में भी चीन उसी रणनीति पर चल रहा है कि सम्पर्क बढ़ाओ, कर्ज दो, कर्ज में फँसाओ और लंगर डालो। मालदीव में भारत एवं चीन की प्रतिस्पर्द्धा, भारत–चीन की समग्र आर्थिक, व्यापारिक, राजनैतिक एवं रणनीतिक प्रतिस्पर्द्धा का ही विस्तार है। किन्तु हाल के चुनाव में इब्राहिम मोहम्मद सालेह की जीत से भारत उत्साहित है।

भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की श्रीलंका, मारीशस, सेशेल्स यात्रा निष्फल जाने की उम्मीद नहीं है। भारत को हिंद महासागर में अपनी एक समग्र एवं समावेशी नीति 'स्ट्रिंग आफ पर्ल्स' के विकल्प के रूप में प्रस्तुत करनी होगी। अब देखना होगा कि 'स्ट्रिंग आफ फ्लावर्स' 'स्ट्रिंग आफ पर्ल्स' का सही विकल्प बन पाती है या नहीं।

संस्तुतियॉ

1. भारत को मालदीव में बढ़ते चीनी प्रभाव को कम करने के लिए एक साथ दो तरफा रणनीति अपनानी पड़ेगी। प्रथम यह कि भारत सीधे तौर पर मालदीव में अपनी उपस्थिति एवं प्रभाव ट्रैक–वन, ट्रैक–टू, ट्रैक–थ्री राजनय के माध्यम से बढ़ाये। और द्वितीय हिन्द महासागर के अन्य तटवर्ती द्वीपीय राष्ट्रों जैसे मरीशस, सेशेल्स आदि के साथ अपने सम्बन्धों को समावेशी ढंग से बढ़ाये।
2. हिंद महासागर में चीनी प्रभाव को कम करने के लिए भारत संयुक्त–राज्य अमेरिका, जापान एवं आस्ट्रेलिया के साथ मिलकर कार्य कर रहा है। इसे और अधिक धार देने की आवश्यकता है। साथ ही साथ दक्षिण चीन सागर के क्षेत्र में भारत को अपनी पकड़ और मजबूत बनाना पड़ेगा। भारत को आसियान एवं अन्य हिन्दमहासागरीय राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध मजबूत करना चाहिए एवं 'एक्ट फार ईस्ट नीति' पर पूर्ण सक्रियता दिखानी चाहिए।
3. भारत सरकार को नौ–सेना बजट बढ़ाना चाहिए। अब समय आ गया है कि नौ–सेना को गौण महत्त्व का नहीं समझा जाना चाहिए। यथाशीघ्र भारतीय नौ–सेना को 'ब्लू वाटर नेवी' के स्तर तक पहुँचाना अपरिहार्य हो गया है।
4. भारत को एशिया–प्रशांत क्षेत्र के उन सभी देशों के साथ अधिकतम नौ सैनिक अभ्यास करने चाहिए जो नौ सैनिक दृष्टि से मजबूत हैं। नौ सैनिक अभ्यास से सम्बन्धित शक्तियॉ एक दूसरे से बहुत कुछ साझा करती हैं। भारत को अपने पड़ोसी दक्षिण एशियाई राष्ट्रों को कुछ छूट देकर भी रिश्ते सुधारने होंगे।
5. यदि भारत को महाशक्ति का दर्जा प्राप्त करना है तो कम से कम दाक्षिण एशिया में उसे सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदाता (Net Security Provider) की हैसियत प्राप्त करना होगा। सैन्य एवं गैर सैन्य सहायता एवं निर्यात तथा तकनीकी मामले में चीन की बराबरी के स्तर तक पहुँचना होगा। रक्षा उत्पादन प्रक्रिया को सरल, तीव्र एवं सस्ती करके रक्षा निर्यात को दक्षिण एशिया एवं हिन्द महासागर क्षेत्रों में बढ़ना होगा।

संदर्भ सूची

[i] Mahan, A T (2010). Sea Power and World History: 1660-1783, Fireship Press, p.48

[ii] पंत, एच. वी. (2012). भारतीय सुरक्षा एवं विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, पृ 238

[iii] कुमार रजनीश. मालदीव से भारत के उखड़ते पैर कितने नुकसानदेह, www.bbc.com, 10/06/2018

[iv] सिंह विजेन्द्र. चीन के विशेष सन्दर्भ में बाँग्लादेश में भारत के सुरक्षा एवं स्त्रातेजिक हित. Journal of Current Sciences. Vol 19. No 9. September 2018. ISSN no. 9726-001x. Page no 3

[v] मुखर्जी टी. https://thediplomat.com/2018/04/chinas-maritime-quest-in-the-indian-ocean-new-delhis-options/12.10.2018

[vi] सिंह विजेन्द्र. वही

[vii] सरन, श्याम. हिंदमहासागर पर चीन के इरादे ठीक नहीं, https//m.aajtak.in 8–10–2018

[viii] सरन, श्याम. वही

[ix] पंत, एच. वी., वही

[x] वही

[xi] मलिक, वी. पी. भारतीय सैन्य शक्ति, प्रगति प्रकाशन नई दिल्ली।

[xii] जेवियर क़. श्रीलंका की असमंजस भरी राह, हिन्दुस्तान, 16.11.2018 पृ 10

[xiii] सरन, श्याम. वही

[xiv] सिंह विजेन्द्र. वही. पृ 4

RRIJM 2015, All Rights Reserved